इमामे हसन असकरी अलैहिस्सलाम

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यदुल उलमा सैय्यद अली नक़ी ताबा सराह

विलादत: 10 रबीउस्सानी 232 हि0 मदीना मुनव्वरा
वफात: 8 रबीउल अव्वल 260 हि0 सामरा (इराक़)

आपकी ज़िन्दगी का अकसर हिस्सा अब्बासी राजधानी सामरा में नज़रबन्दी या क़ैद की हालत में गुज़रा मगर इस हालत में आपकी बुलन्द किरदारी और बुलन्द सीरत के मुज़ाहरे से जो असर पड़ा उसका नतीजा मौलाना सै0 इब्ने हसन साहब जारचोई ने बहुत ही अच्छे अलफाज़ में किया है।

"हज़ारों रूमी और तुर्की गुलाम जो आहिस्ता–आहिस्ता दरबारे ख़िलाफत में रुसूख़ पा रहे थे और अपनी उन रिश्तेदार औरतों की मदद से जो बादशाह के हरम में दख़ील थीं ऊँचे ओहदों और मन्सबों पर चढ़ते जा रहे थे ख़लीफा की अख़लाक़ी कमज़ोरियों को देखकर बिलकुल इस्लाम से बेगाना और दीन से भाग जाते मगर उन दीन के इमामों ने जो ख़लीफा की बदकिरदारियों के मुक़ाबले में एक आला दर्जे की सीरत पेश करते थे इस्लाम का भ्रम रख लिया। और मुस्लिम समाज को बिलकुल बर्बाद होने से बचा लिया। जब आम लोग आले रसूल (स0) के उन बेहतरीन सरदारों को देखते और सीरत व किरदार के आला नमूनों पर निगाह डालते तो उनको यक़ीन आ जाता कि दीने इस्लाम कुछ और चीज़ है और उसका नाम लेकर मुलकों पर हुकमरानी करना कुछ और चीज़ है।

राजधानी और शाही दरबार के क़रीब में दीन के इमामों की मौजूदगी ने इस्लाम को एक बड़े इंक़ेलाब से बचा लिया। बनी उमैय्या के ज़ुल्मों से तंग आकर लोगों ने नबी के घर वालों के दामन में पनाह ली थी और समझते थे कि अब हम इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम को पहचान गए और इसके अहकाम पर अमल करेंगे। जब अब्बासियों की आमद भी दीनी और समाजी गुत्थियों को सुलझा न सकी तो फितरी तौर पर लोगों को यह एहसास पैदा हो चला कि इस्लाम ही अमन वाला समाज पैदा करने से मजबूर है मगर अहलेबैत के इमामों की मौजूदगी ने मुसलमानों को मुतमइन कर दिया कि इस्लाम के सही मुबल्लिग़ अभी तक बरसरे इक़तेदार नहीं आए और उनको उम्मत के सुधार, सीरत की तश्कील और अख़लाक़ की तामीर का मौक़ा नहीं मिला। इसलिए मुल्क की बदहाली और तबाही का ज़िम्मेदार इस्लाम नहीं है बल्कि वह क़ाबू पायी हुई जमात है जो इस्लाम का नाम लेकर दुनिया के सर पर सवार हो गयी है।" (तज़किरा–ए–मुहम्मद व आले मुहम्मद स0 जिल्द–3)

बावजूद यह कि अपने दौरे इमामत में आपकी तक़रीबन पूरी ज़िन्दगी क़ैद व बन्द में रही फिर भी अपने बुज़ुर्ग दादा अमीरुलमोमिनीन (अ0) और दूसरे बुज़ुर्गों की सीरत के मुताबिक़ जब इस्लाम को आपकी मदद की ज़रूरत पड़ी तो ज़ालिम हुकूमत के बढ़ाए हुए फरियाद के हाथ को कभी नाकाम वापस जाने न दिया। चुनानचे जब क़हत के मौक़े पर एक ईसाई राहिब ने बारिश कराके अपनी रूहानियत दिखाकर अब्बासी राजधानी के बहुत से मुसलमानों के इस्लाम से फिर जाने के हालात पैदा कर दिये तो उस वक़्त

बक़िया ....पेज 7 पर

दिल की पाकी और किरदार की पाकी के लिए हर मुमकिन कोशिश फरमायी और इस फ़र्ज़ को पूरा करने के लिए सबसे पहले ख़ुद अपनी ही सीरते तैय्यबा को पेश फरमाया और कुर्आन पुकार उठा :

''तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (स0) का एक उम्दा नमूना मौजूद है। उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन की उम्मीद रखता हो और कसरत के साथ अल्लाह को याद करता हो।''

एक मुअल्लिम और मुस्लेह की हिदायत पूरी तरह दिलों पर उस वक़्त असर करती है जब उसका अमल और उसकी सीरत भी उसके क़ौल के मुताबिक़ हो और वह सीरत व अमल दूसरों से छुपा न हो यही वजह है कि किरदार की पाकी के अज़ीम काम में सरवरे दो आलम (स0) को वह मक़ाम हासिल है जिसकी दूसरी मिसाल हमें नहीं मिलती इसलिए कि बचपने से जवानी और बुढ़ापे तक आपकी सीरते पाक का हर पहलू हमारे सामने मौजूद है जिसमें न कोई परदा और हिजाब है और न कोई शक व शुब्हा और इज्माल व इख़्फ़ा है। इसलिए ज़िन्दगी के क़ाफले के हर क़दम पर हम आपकी सीरते पाक की मिसाल को अपने सामने रखकर अपने किरदार का सुधार और उसको पाक कर सकते हैं और यही वह अकेला रास्ता है जिसमें हमारी दुनियावी और आख़ेरत की कामियाबी और नजात छुपी हुई है।

खुदा हम सब मुसलमानों को उस्व–ए–हसना सरवरे दो आलम (स0) पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फरमाए। (आमीन)

□□□

बक़िया इमामे हसन असकरी (अ0)

इमामे हसन असकरी (अ0) थे जिन्होंने उसके जादू को तोड़कर मुसलमानों के साबित क़दम रहने का सामान फ़राहम किया।

इसके अलावा आपने सच्चे दीन के परस्तारों की दीनी तालीम व तरबियत के फ़रीज़े को नज़रअन्दाज़ नहीं किया। इसके लिए अपनी तरफ से सफरा मुक़र्रर किए जो अपनी इल्मी समझदारी से ख़ुद शरअी मसाएल का जवाब देते थे और जिन मसाएल में इमाम (अ0) से पूछने की ज़रूरत होती थी उनका खुद ही मुनासिब मौक़े पर इमाम (अ0) से जवाब हासिल करके पूछने वाले को मुतमइन कर देते थे। इनही के ज़रिए से खुम्स के माल को जमा किया जाता था और वह तनज़ीमे सादात और दूसरे दीनी कामों में ख़र्च होता था। इस तरह दुनियावी सलतनत के बराबर में दीनी हुकूमत का पूरा इदारा कामियाबी के साथ चल रहा था।

फिर आपने क़ैद व बन्द के इसी शिकंजे में जो बार–बार पड़ता रहा इस्लाम के मआरिफ की ख़िदमत भी जारी रखी। चुनानचे आपकी कुछ अहादीस शीओं की जामे हदीसों में लिखी हैं और कुछ अहलेसुन्नत की किताबों में भी लिखी हैं। इसी तरह आपके शार्गिदों ने भी आपके इल्मी फाएदे तैयार किये हैं।

□□□